वैशेषिक दर्शन में पदार्थ के रूप में गुण

होने वाला संयोग इसका उदाहरण है।

(ii) उभय कर्मज !- यह संयोग दोनों द्रव्यों की गति के कारण होता है। दंगल में दो पहलवानों का संयोग इसका उदाहरण है।

(iii) संयोगज संयोग:- उदाहरणार्थ हमारे हाथ में जो कलम है उससे टेबल का संयोग हो तो हमारे हाथ का टेबुल के साथ जो संबंध हो जाता है वही ~~सयोज~~ संयोगज संयोग कहलाता है।

(7) विभाग !- यह दो संयुक्त द्रव्यों का अलग हो जाना कहा जाता है। यह भी तीन प्रकार का होता है। कभी-कभी विभक्त द्रव्यों में एक ही गति के कारण विभाग होता है। कभी दोनों विभक्त द्रव्यों की गति के कारण तो कभी एक विभाग से दूसरा विभाग हो जाता है।

(8) दूरत्व और अपरत्व क्रमशः निकट और दूर प्रत्यय के आधार हैं। इनमें से प्रत्येक दो प्रकार के होते हैं। कालिक और दैशिक।

परिमाण :- परिमाण वह गुण है जिसके कारण बड़े और छोटे का भेद दिखाई पड़ता है। परिमाण चार प्रकार के हैं (i) अणुत्व (ii) महत्व (iii) लम्बाई (iv) ओछापन।

वस्तुओं की चेतना को बुद्धि कहा गया है। ईश्वर में बुद्धि नित्य है। जीवात्माओं में बुद्धि अनित्य है। अनुकूल वेदना का सुख और प्रतिकूल वेदना को दुःख कहा जाता है। किसी वस्तु के प्रति अनुराग को इच्छा कहते हैं। यह तीन प्रकार का होता है:-

(1) प्रवृति अर्थात किसी वस्तु को पाने का प्रयत्न (2) निवृति अर्थात किसी वस्तु से बचने का प्रयत्न (3) जीवन योनि प्रयत्न-अर्थात प्राणधारणा की क्रिया, जैसे सांस लेना आदि।

वस्तुओं का वह गुण जिसके कारण वे नीचे की ओर गिरती है उसे गुरुत्व कहा जाता है। द्रवत्व बहने का कारण है। इसी गुण के कारण जल, दूध आदि का बहाव होता है।

स्नेह का अर्थ चिकनापन है। इसी के कारण द्रव्यों के कणों का परस्पर संश्लिष्ट हो जाना संभव होता है। यह गुण केवल

वैशेषिक दर्शन में पदार्थ के रूप में गुण

जल में पाया जाता है। संस्कार तीन प्रकार के माने गये है - (i) वेग :- यह गति का कारण है। इसके कारण वस्तुये गतिमान होती है। (ii) भावना - इसके कारण किसी विषय की स्मृति होती है। (iii) स्थिति स्थापकत्व - इसके चलते चीजे हेडी जाने पर अपनी आरम्भिक अवस्था में वापस आ जाती है। अतः पूर्वजन्मों के कर्म ~~फल~~ संस्कार कहे जाते है।

संख्या एक साधारण गुण है। इसी के कारण एक, दो, तीन जैसे शब्दों का व्यवहार किया जाता है। धर्म से पुण्य का बोध होता है। अधर्म से पाप का बोध होता है। जीवात्मा ~~के~~ धर्म के कारण सुख और अधर्म के कारण दुःख भोगती है।

वैशेषिक के गुणों के संबंध में यहाँ प्रश्न उठता है कि गुणों की संख्या चौबीस ही क्यों मानी गयी है? इसके उतर में कहा गया है कि गुणों का वर्गीकरण सरलता के सिद्धान्त पर आधारित है। जो गुण सरल तथा मौलिक हैं उन्हीं की चर्चा इन चौबीस गुणों के अन्दर की गई है। इन चौबीसो गुणों में से अधिकांश गुणों का उपविभाजन होता है जैसे विभिन्न प्रकार के रंग - लाल, पीला, उजला इत्यादि है। यदि इन प्रभेदों को गुणों के अन्दर रखा जाय तो इसकी संख्या असंख्य होगी। अतः इन चौबीस गुणों की व्याख्या में वे ही गुण आये है जो निष्क्रिय तथा मौलिक है। ~~इस~~ इस तरह हम देखते है कि वैशेषिक द्वारा गुणों को चौबीस मानना एक निश्चित दृष्टिकोण को अपनाता है।